एदं सुत्तं सुगमं, तदो ण किंचि वत्तव्वमत्थि ।

एवं लेस्सामग्गणा समत्ता ।

**भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं[1] ॥ १६५ ॥**

एदं सुत्तं सुगमं, वट्टमाणादीदकाले अस्सिदूण ओघम्हि परूविदत्तादो ।

**अभवसिद्धिएहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं, सव्वलोगो[2] ॥ १६६ ॥**

सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो । विहार वेउव्वियपरिणदेहि वट्टमाणकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स वि असंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; असंखेज्जरासीसु तेसिमसंखेज्जदिभागमेत्तो तत्थ तत्थ अभव्वरासी त्ति उवदेसादो । अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

---

यह सूत्र सुगम है, इसलिए कुछ भी अन्य वक्तव्य नहीं है ।

इसप्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

**भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १६५ ॥**

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान और अतीतकालको आश्रय करके ओघमें इसका प्ररूपण हो चुका है ।

**अभव्यसिद्धिक जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १६६ ॥**

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत अभव्यसिद्धिक जीवोंने तीनों ही कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है । विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकपदपरिणत अभव्यसिद्धिक जीवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका भी असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, असंख्यात प्रमाणवाली पंचेन्द्रियादि राशियोंमें उन उनके असंख्यातवें भागप्रमाण वहां वहां पर अर्थात् उन उन विवक्षित राशियोंमें अभव्यराशि होती है, इस प्रकार आचार्योंका उपदेश पाया जाता है । उक्त जीवोंने अतीतकालमें आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं ।

इसप्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

---

१ भव्यानुवादेन भव्यानां मिथ्यादृष्टयाद्ययोगकेवल्यन्तानां सामान्योक्तं स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.

२ अभव्यैः सर्वलोकः स्पृष्टः । स. सि. १, ८.

**समत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं[1] ॥ १६७ ॥**

एदं सुत्तं सुगमं, ओघम्हि तिण्णि वि काले अस्सिदूण परूविदत्तादो ।

**खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ १६८ ॥**

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा । सत्थाणपदिणदेहि खइयअसंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; विहार-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा । उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । तं कधं लब्भदे ? बद्धाउअमणुसखइयसम्मादिट्ठीसु तिरिक्खेसुप्पज्जमाणेसु असंखेज्जदीवेसु अच्छिय सोधम्मीसाणकप्पेसु उप्पज्जमाण-

---

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १६७ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, तीनों ही कालोंका आश्रय करके ओघमें प्ररूपण किया जा चुका है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १६८ ॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रके समान है । स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत असंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकपदपरिणत उक्त जीवोंने आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं । उपपादपदपरिणत असंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा और तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।

शंका— उपपादगत असंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण कैसे पाया जाता है ।

समाधान— तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले बद्धायुष्क क्षायिकसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके असंख्यात द्वीपोंमें रह करके पुनः मरणकर सौधर्म और ईशानकल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले

---

१ सम्यक्त्वानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टीनामसंयतसम्यग्दृष्ट्याद्ययोगकेवल्यन्तानां सामान्योक्तम् । किन्तु संयतासंयतानां लोकस्यासंख्येयभागः । स. सि. १, ८.

खइयसम्मादिट्ठिछुत्तखेत्तं मणुस्सेसुप्पज्जमाणखइयसम्मादिट्ठिफोसिदखेत्तं च घेत्तूण लब्भदे। एदम्हि खेत्ते आणिज्जमाणे देसूणजोयणलक्खबाहल्लं रज्जुपदरं उड्ढं सत्तवग्गेण छिंदिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स बाहल्लादो संखेज्जदिभागबाहल्लं जगपदरं होदि। एवं संजादे ओघत्तं कधं जुज्जदे ? ण, उववादविरहिदसेसपदखेत्तेहि तुल्लत्तमावेक्खिय ओघत्तुववत्तीए।

**संजदासंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६९ ॥**

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा। सत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्विय-परिणदेहि खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस संखेज्जदिभागो, संखेज्जा भागा वा फोसिदा; खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदाणं तिरिक्खेसु असंभवादो। मारणंतियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो तीदे काले फोसिदो, पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभेण संखेज्जरज्जुआयदफोसणखेत्तुवलंभादो।

---

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे स्पर्शित क्षेत्रको, तथा वहांसे चयकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंके स्पर्शित क्षेत्रको ग्रहण करके तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है।

इस उक्त क्षेत्रके निकालनेपर कुछ कम एक लाख योजन बाहल्यवाले राजुप्रतरको ऊपरसे सातके वर्ग (४९) द्वारा छेदकर प्रतराकारसे स्थापित करने पर तिर्यग्लोकके बाहल्यसे संख्यातवें भाग बाहल्यवाला जगत्प्रतर होता है।

शंका– ऐसा होने पर सूत्रोक्त ओघपना कैसे घटित होगा ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उपपादपदको छोड़ शेष पदोंके क्षेत्रोंके साथ समानता देखकर ओघपना बन जाता है।

**क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥ १६९ ॥**

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग, अथवा संख्यात बहुभाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंका तिर्यंचोंमें होना असंभव है। मारणान्तिकपदपरिणत क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा

पमत्तादिगुणट्ठाणाणं ओघभंगो, विसेसाभावा ।

**सजोगिकेवली ओघं ॥ १७० ॥**

एदं सुत्तं सुगमं, ओघम्हि परूविदत्तादो ।

**वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं[1] ॥ १७१ ॥**

एदस्स सुत्तस्स जेण अदीद-वट्टमाणपरूवणा मूलोघम्हि उत्तचदुगुणट्ठाण-अदीदवट्टमाणपरूवणाए तुल्ला, तेण ओघत्तं जुज्जदे ।

**उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठी ओघं[2] ॥ १७२ ॥**

वट्टमाणपरूवणाए सव्वपदाणं ओघत्तं होदु णाम, विसेसाभावा । अदीद-परूवणाए वि सत्थाणस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तखेत्तुवलंभादो । विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदाणं पि देसूणट्ठ-चोद्दसभागमेत्तखेत्तुवलंभादो ओघत्तं जुज्जदे । किंतु

---

क्षेत्र अतीतकालमें स्पर्श किया है, क्योंकि, पंतालीस लाख योजन विष्कम्भके साथ संख्यात राजुप्रमाण आयत स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है । प्रमत्तादि गुणस्थानोंकी स्पर्शनप्ररूपणा ओघके समान है, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

सयोगिकेवली जिनोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७० ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, ओघमें इसका प्ररूपण किया जा चुका है ।

वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७१ ॥

चूंकि, इस सूत्रकी अतीत और वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा मूलोघमें कही गई उक्त चारों गुणस्थानोंकी अतीत और वर्तमानकालिक प्ररूपणाके समान है, इसलिए ओघपना बन जाता है ।

औपशमिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७२ ॥

शंका— वर्तमानकालिक स्पर्शनकी प्ररूपणामें सर्व पदोंके ओघपना भले ही रहा आवे; क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । अतीतकालिक प्ररूपणामें भी सर्व पदोंके ओघपना रहा आवे; क्योंकि, अतीतप्ररूपणामें भी स्वस्थानपदका स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र पाया जाता है । तथा, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदोंका स्पर्शनक्षेत्र भी कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{८}{१४}$) भागप्रमाण पाये जानेसे ओघपना बन जाता है ।

---

१ क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टीनां सामान्योक्तम् । स. सि. १, ८.

२ औपशमिकसम्यक्त्वानामसंयतसम्यग्दृष्टीनां सामान्योक्तम् । स. सि. १, ८.

मारणंतिय-उववादपरिणदाणमोघत्तं णत्थि, ओघम्हि उत्तं अट्ठ-चोद्दसभागमेत्तं मोत्तूण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणमेत्तफोसणखेत्तुवलंभा। कुदो? मणुसगदिं मोत्तूण अण्णत्थ उवसमसम्मत्तेण सह मरणाणुवलंभा? ण एस दोसो, मारणंतिय-उववादे मोत्तूण सेसपदेहि सरिसत्तमत्थि त्ति ओघत्तुववत्तीदो।

**संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ १७३ ॥**

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा। सत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदउवसमसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, मणुसगदीए चेव मारणंतियदंसणादो। सेससव्वगुणट्ठाणाणमोघभंगो।

किन्तु मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत जीवोंके ओघपना नहीं बनता है, क्योंकि, ओघमें कहा गया आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भागप्रमाण क्षेत्र छोड़कर सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणे प्रमाणवाला स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है। और इसका कारण यह है कि मनुष्यगतिको छोड़कर अन्यत्र उपशमसम्यक्त्वके साथ मरण नहीं पाया जाता है?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, इन दोनों पदोंको छोड़कर पदोंके साथ सदृशता है, इसलिए ओघपना बन जाता है।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १७३ ॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। स्वस्थान-स्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। मारणान्तिक-समुद्घातपदपरिणत उक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। इसका कारण यह है कि मनुष्यगतिमें ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके मारणान्तिकसमुद्घात देखा जाता है। शेष सर्व गुणस्थानोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है।

१ शेषाणां लोकस्यासंख्येयभागः। स. सि. १, ८.

**सासणसम्मादिट्ठी ओघं[1] ॥ १७४ ॥**

**सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १७५ ॥**

**मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १७६ ॥**

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि अवगदत्थाणि, ओघम्हि परूविदत्तादो। तदो एदेसिं परूवणा ण कीरदे।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता।

**सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[2] ॥ १७७ ॥**

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगा, समल्लीणवट्टमाणकालत्तादो।

**अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा, सव्वलोगो वा ॥ १७८ ॥**

सत्थाणपरिणदेहि सण्णिमिच्छादिट्ठीहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-

---

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७४ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७५ ॥

मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७६ ॥

ये उक्त तीनों ही सूत्र ओघमें प्ररूपित होनेसे अवगतार्थ हैं, अर्थात् इनका अर्थ जाना हुआ है। इसलिए इनकी प्ररूपणा नहीं की जाती है।

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १७७ ॥

वर्तमानकालको आश्रय करनेसे इस सूत्रकी स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है।

संज्ञी जीवोंने अतीत और वर्तमानकालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १७८ ॥

स्वस्थानस्वस्थानपरिणत संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा

---

१ सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्टिमिथ्यादृष्टीनां सामान्योक्तम्। स. सि. १, ८.

२ संज्ञानुवादेन संज्ञिनां चक्षुर्दर्शनिवत्। स. सि. १, ८.

भागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहार-वेदण-कसाय वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठचोद्दसभागा, मारणंतिय-उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो।

**सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ १७९ ॥**

एदेसिमोघादो ण को वि[1] भेदो णत्थि, सण्णिरहिदसासणादीणमभावा।

**असण्णीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, सव्वलोगो[2] ॥ १८० ॥**

सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि असण्णीहि तिसु वि अद्धासु सव्वलोगो फोसिदो। विहारपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो तिसु वि कालेसु फोसिदो। वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो वट्टमाणे फोसिदो। तीदे पंच चोद्दसभागा त्ति वत्तव्वं।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता।

---

क्षेत्र स्पर्श किया है। विहारवत्स्वस्थान, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंने आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपद-परिणत संज्ञी जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है।

संज्ञी जीवोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १७९ ॥

इन गुणस्थानोंकी स्पर्शनप्ररूपणाका ओघस्पर्शनप्ररूपणासे कोई भेद नहीं है, क्योंकि, संज्ञित्वसे रहित सासादनादि गुणस्थानोंका अभाव है।

असंज्ञी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १८० ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिक और उपपादपदपरिणत असंज्ञी जीवोंने तीनों ही कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है। विहारवत्स्वस्थानपदपरिणत जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र तीनों ही कालोंमें स्पर्श किया है। वैक्रियिकपदपरिणत असंज्ञी जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र वर्तमानकालमें स्पर्श किया है। अतीतकालमें पांच बटे चौदह ($\frac{5}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं, ऐसा कहना चाहिए।

इस प्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई।

---

१ प्रतिषु 'कोत्थि' इति पाठः; म प्रतौ 'को छि' इति पाठः।

२ असंज्ञिभिः सर्वलोकः स्पृष्टः। स. सि. १, ८.

**आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठी ओघं[1] ॥ १८१ ॥**

उववादस्स रज्जुआयामो आहारणिरुद्धे ण लब्भदि, तेण सव्वलोगफोसणाभावा णोघत्तं जुज्जदे ? ण, सरीरगहिदपढमसमए वट्टमाणजीवेहि आऊरिदसव्वलोगु-वलंभादो । सेसं सुगमं ।

**सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ओघं ॥ १८२ ॥**

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा । तीदकालपरूवणं भण्णमाणे फोसणोघम्हि चदुण्हं गुणट्ठाणाणं जहा उत्तं तधा वत्तव्वं । णवरि सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मा-दिट्ठीहि उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदि-भागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ।

**पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १८३ ॥**

---

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १८१ ॥

शंका– आहारमार्गणाकी अपेक्षा कथन करनेपर उपपादपदका राजुप्रमाण आयाम नहीं पाया जाता है, इसलिए सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रके स्पर्शनका अभाव होनेसे ओघपना नहीं बनता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयमें वर्तमान जीवोंसे व्याप्त सर्वलोकके पाये जानेसे ओघपना बन जाता है ।

शेष अर्थ सुगम ही है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती आहारक जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १८२ ॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रके समान है । अतीतकालकी प्ररूपणा कहनेपर स्पर्शनके ओघमें जैसा कि इन चारों गुणस्थानोंका स्पर्शनक्षेत्र कहा है, उसी प्रकारसे कहना चाहिए । विशेष बात यह है कि उपपादपरिणत सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है ।

आहारक जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १८३ ॥

---

१ आहारानुवादेन आहारकाणां मिथ्यादृष्ट्यादिक्षीणकषायान्तानां सामान्योक्तम् । स. सि. १, ८.

२ सयोगकेवलिनां लोकस्यासंख्येयभागः । स. सि. १, ८.

एदस्स सुत्तस्स परूवणा अदीद-वट्टमाणेहि ओघतुल्ला। णवरि सजोगकेवली पदर-लोगपूरणपदा णत्थि।

**आहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो[1] ॥ १८४ ॥**

कुदो ? कम्मइयकायजोगीसु सव्वेसु अणाहारियत्तुवलंभादो।

अजोगिअणाहारपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

**णवरि विसेसा, अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[2] ॥ १८५ ॥**

एदं सुत्तं सुगमं।

(एवं आहारमग्गणा समत्ता)

एवं फोसणाणुगमो त्ति सम्मत्तमणिओगद्दारं।

---

इस सूत्रकी प्ररूपणा अतीत और वर्तमान इन, दोनों कालोंकी अपेक्षा ओघप्ररूपणाके समान है। विशेष बात यह है कि सयोगिकेवलीके प्रतर और लोकपूरणसमुद्धात, ये दो पद नहीं होते हैं।

अनाहारक जीवोंमें संभवित गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र कार्मणकाययोगियोंके क्षेत्रके समान है ॥ १८४ ॥

इसका कारण यह है कि सभी कार्मणकाययोगियोंके अनाहारकपना पाया जाता है।

अनाहारी अयोगिजिनके स्पर्शनक्षेत्रके प्ररूपण करनेके लिए उत्तर सूत्र कहते हैं—

विशेष बात यह है कि अयोगिकेवलियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १८५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

(इस प्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई।)

इस प्रकार स्पर्शनानुगम नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

---

१ अनाहारकेषु मिथ्यादृष्टिभिः सर्वलोकः स्पृष्टः। सासादनसम्यग्दृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः एकादश, चतुर्दशभागा वा देशोनाः। सयोगिकेवलीनां लोकस्यासंख्येयभागः सर्वलोको वा। स. सि. १, ८.

२ अयोगिकेवलिनां लोकस्यासंख्येयभागः। स. सि. १, ८.